UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 24 सरोजिनी नायडू (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी, 1879 ई० को हैदराबाद में हुआ। उनके पिता का नाम अघोरनाथ चट्टोपाध्याय और माता वरदा सुन्दरी थी। सरोजिनी को उनसे कविता लेखन की प्रेरणा मिली। 12 वर्ष की उम्र में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करके इन्हें शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड भेजा गया। वहाँ पर सरोजिनी के तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए- 'द गोल्डेन श्रेश होल्ड', 'द ब्रोकेन विंग' और 'द सेप्टर्ड फ्लूट'। इंग्लैण्ड से वापस आने पर सरोजिनी का विवाह गोविन्दराजुले नायडू से हो गया। सरोजिनी नायडू की भेंट गांधी जी से हुई। वह गोपाल कृष्ण गोखले के कार्य से प्रभावित होकर कांग्रेस की प्रवक्ता बन गई। उन्होंने देशभर में घूमकर स्वतन्त्रता का संदेश फैलाया। सरोजिनी नायडू ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया। उन्होंने इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि देशों का दौरा किया। गांधी जी की दाण्डी यात्रा में वे उनके साथ थीं। उनके भाषण स्वतन्त्रता की चेतना जगाने में जादू का काम करते थे। 1942 ई० में भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया। वे कई बार जेल गईं। भारत के स्वतन्त्र होने पर वे उत्तर प्रदेश की राज्यपाल बनीं।

सरोजिनी ने नारी मुक्ति और नारी-शिक्षा आन्दोलन शुरू किया। नारी-विकास को ध्यान में रखकर ही वे अखिल भारतीय महिला परिषद् की सदस्य बनीं। विजय लक्ष्मी पण्डित, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, लक्ष्मी मेनन, हंसाबेन मेहता आदि महिलाएँ इस संस्था से जुड़ी थीं।

सरोजिनी नायडू का व्यवहार बहुत सामान्य था। वे युवा वर्ग की सुविधाओं का बहुत ध्यान रखती थीं। वाणी और व्यवहार में सरोजिनी बहुत ही स्नेहमयी थीं। प्रकृति से उन्हें विशेष प्रेम था। 2 मार्च सन् 1949 ई० को भारत-कोकिला सदा के लिए मौन हो गईं। पं० जवाहर लाल नेहरू ने इन शब्दों में सरोजिनी को श्रद्धांजलि दी, "उनकी पूरी जिन्दगी एक कविता, एक गीत थी, सुन्दर, मधुर और कल्याणमयी।"

https://www.evidyarthi.in/